YOUNG RESEARCHER
ISSN: 2277-7911 Impact Factor: 5.077 (SJIF 2021)
Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 12, Issue - II, Apr-May-June 2023

समाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्ति करण

डॉ. बन्दना श्रिवास्तव

(असिस्टेंट प्रोफेसर) Ph.D. (Economics)

रामेश्वर सिंह टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज (पांडेय परसावां गया बिहार) (मगध विश्व विद्यालय बोधा गया)

Corresponding Author: डॉ. बन्दना श्रिवास्तव

DOI - 10.5281/zenodo.8347526

प्रस्तावना:

भारतीय महिलायें उर्जा से लबरेज,यूरदर्भिता जीवन उत्साह और प्रतिबंद्धता के साथ सभी चुनोतियों का सामना करने में सक्षम हैं।

भारत के प्रथम नोबेल पूरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर के शब्दों में हमारे लिये महिलायें न केवल घर की रोशनी हैं बल्कि की लौ भी है। अनादि कोन से ही महिलायें मानवता की प्रेरणा का स्त्रोत रही है।

सामाजिक क्षेत्र में महिला:

महिलायें परिवार बनाती हैं, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है। इसका सीघा-सीघा अर्थ यही है की महिला का योगदान हर जगह है। महिला की क्षमता को नगर अंदाज करके समाज की कल्पना करना त्थर्थ है। शिक्षा और महिला ससक्तिकरण के बिना परिवार, और देश का विकास नहीं हो सकता।

परन्तु वर्तमान में सत्य विडन्बना यही है की भारतीय समाज में महिला आज भी कमजोर वर्गो में सामिल है। जबकी महिला परिवार की आधारशिला है। और सामाजिक विकास बहुत कुछ उस के सदप्रयासी से सम्भव है। जिस समाज की महिलायें उपेक्षा और तिरस्कार का शिकार होती है वह समाज कभी प्रगति नहीं कर सकता है। ‘‘शिक्षित स्त्री के बिना शिक्षित पूरूष हो ही नहीं समता।

वास्तव में एक नारी को शिक्षित करने का अर्थ एक परिवार को शिक्षित करना हे। वर्तमान युग को वैचारिकता का युग कहा जाता हैं।

अतः शिक्षा सामाजिक सशक्तिकरण के लिये प्रथम एवं मूलभूत सांधन है। यह माना जाता है की शिक्षा ही वह उपकरण है जिससे महिला समाज में अपनी सशक्त, समान व उपयोगी भुमिका की अनुंभूति करा सकती है। शिक्षा के आधार पर महिला में दक्षता, कौशल, ज्ञान एवं क्षमताओं का विकास होता है। एक शिक्षित महिला न केवल इससे साभवित होती है,वस उससे भावी पीढ़ी भी

लाभांन्वित होती है। चूँकि महिला की शिक्षा से उसका शोषण रोकने में सहायता मिलेगी। निर्णय लेने की क्षमता सशक्तिकरण का एक बड़ा मानक है।

जहाँ तक महिलाओं का सामाजिक क्षेत्र में सशक्तिकरण की बात है वहाँ समाज में महिलाओं की भुमिका निम्नलिखित हैः-

1. समाज में महिलायें अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम किरदार नियाती है।
2. अपनी भुमिकाओं में निपूणता दर्शाने के बावजुद आज के आधूनिक युग मे महिला पूरूष के पिछे खड़ी दिखाई देती है।
3. महिलायें समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भुमिका को निभाती है।
4. भारत की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलायें करती हैं।
5. आज भी देश की ये आधी जनंसख्या अशिक्षित है।
6. यदि महिलायें हो पढ़ी लिखी नहीं होंगी तो देश कभी प्रगति नहीं कर पायेगा।
7. महिलायें परिवार बनाती हैं परिवार हर बनाता है, घर समाज बनाता है घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है।
8. शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के बिना परिवार समान और देश का विकास नहीं हो सकता।
9. महिलाओं की क्षमता को नजर अंदाज करके समाज को कल्पना करना व्यर्थ है।

इस प्रकार समाज के सहयोग से ही महिलाओं का सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलायें शक्तिशाली बनती हैं जिससे वह अपने जीवन से जुड़े सभी फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। अतः समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षय बनाना महिला सशक्तीकरण है।

आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरणः

महिला आर्थिक सशक्तिकरण सकारात्मक विकास परिणामों के अलावा उत्पादकता को बढ़ाता है। इसके साथ हीं आर्थिक विविधी करण और आय समानता को भी बढ़ाता है। महिलाओं के अधिकारो और लैंगिक समानता को प्ररीभूत करने के लिये महिला आर्थिक सशक्तिकरण के लिय आवश्यकता है।

वहीं दूसरी ओर सकल घरेलु उत्पाद में महिलाओं के योगदान के मामले में वैश्विक औसत 37 प्रतिशत की तुलना में भारत में महिलाओं का योगदान मात्र 17 प्रतिशत है।यदि महिलायें भी पूरूषों के समान अर्थव्यवस्था में भागीदारी करें तो इससे वर्ष 2025 तक भारत की वार्षिक जीडी जो 2 ट्रिलियन डॉलर दृहि हो सकती है।

इस प्रकार पूरूषों और महिलाओं के बीच कल्याण के अंतर को कम करना विकास का उतना ही हिस्सा है जितना की आय गरीबी को कम करना। अधिक लैंगिक समानता आर्थिक दक्षता को भी बढ़ाती है और अन्य विकास परिणामों में सुधार करती है।

V-shaped Recovery

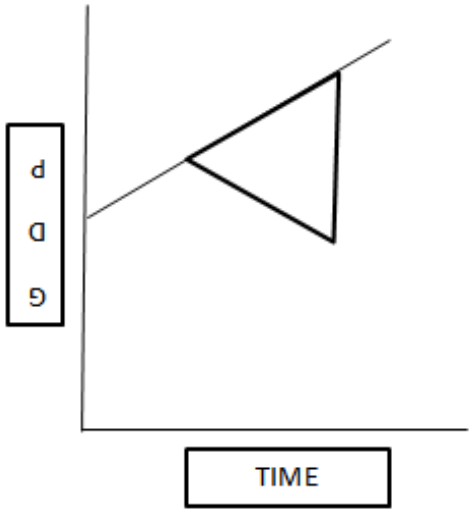

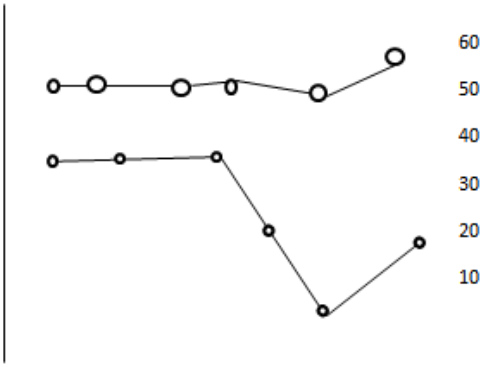

इस प्रकार महिलायें हमारे देश की आधी आबादी हैं जब अधिक महिलायें काम करती है। तो इसका असर हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। महिला आर्थिक सशक्तिकरण सकारात्मक विकास परिणामों और उपादकता को बढ़ाता है इसके अलावा यह आर्थिक विविधीकरण और आय समानता को भी बढ़ाता है।

महिलाओं के अधिकारों और लैंगीक समानता को करने के लिये महिला आर्थिक सशक्तिकरण Women Economic Empowerment केन्द्रीय आवश्यकता है। महिला उधमियों के लिये मानसिक और आर्थिक रूप् से उनकी सफलता की याताके लिये अधिक सहयोग और अवसर प्रदान करना समय की मांग है।

वर्तमान में भारत में लगभग 432 मिलियन कामकाजी महिलाये है जिनमें से 343 मिलियन असंगढीत क्षेत्र में कार्यरंत हैं। मैकिन्सेग्लोबल इंस्टीटयूट Mckinsey Global Institute की एक रिपोर्ट ने अनुमान लगाया है की महिलाओं को समान अवसर देकर भारत 2025 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद में 770 बिलियन अमेरिकी डॉलर जोड़ सकता है।भारतीय स्टार्टअप हथ्य एक महत्वपूर्ण बदलाव देख रहा है। क्योकी महिला उघमी बाधाओं को तोड़ती है और अपनी पहचान स्थापित करती है। एक धनिया रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत के लगभग 18 युनिकॉर्न अब महिलाओं द्वारा स्थापित किये गये है।

निष्कर्ष:

अतः उपर्युक्त विवरण एवं आँकडों को देखते हुये यह तथ्य सत्य प्रतीत होता है की अभी भी वर्तमान में महिलाओं के सामजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण में सूधार एवं और कदम बढ़ाने की नितान्त आवश्क्ता है तभी हम समाज एवं देश में नारियों के उन्नत स्थान एवं भलिय की कल्पना कर सकते है।

सन्दर्भ:

1. प्रीवास्तव, सुधा रानी - भारत में महिलाओं की वैधानिक स्थिती
2. अंसारी, एम. ए - महिला और मानवाधिकार
3. तिवारी. आर. पी. - भारतीय नारी वर्तमान समस्थाएँ एवं समाधान
4. देवापूरा प्रतापभल - महिला सशक्तिकरण में शिक्षा का महत्व